डीआईटी विश्वविद्यालय देहरादून के दीक्षांत समारोह में विजिटर माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(15 अक्टुबर 2022)

जय हिन्द!

इस दीक्षांत समारोह में उपस्थित डीआईटी विश्वविद्यालय के बीओजी अध्यक्ष श्री अनुज अग्रवाल जी, चांसलर श्री एन. रविशंकर जी, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के मानव संसाधन निदेशक श्री रंजन के. महापात्रा जी, कुलपति प्रो. जी. रघुराम जी, गणमान्य, अकादमिक परिषद और बीओजी के सदस्य, संकाय और कर्मचारी गण, अभिभावक गण, प्रिय छात्र–छात्राओं, देवियों और सज्जनों!

डीआईटी विश्वविद्यालय के इस छठे दीक्षांत समारोह में आप सब के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

आज के इस दीक्षान्त समारोह में उपाधियां और मेडल प्राप्त करने के बाद आप एक नये विज़न के साथ देश सेवा के लिए आगे आ जाएंगे। आप की इस उपलब्धि के के लिए आप सभी को मैं बहुत– बहुत बधाई देता हूँ ।

साथ ही आपके आने वाले उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

आपने अपने गुरुओं और माता पिता के आशीर्वाद से अपनी मेहनत, प्रतिभा और साधना के बल पर ये उपाधियां और मेडल प्राप्त किये हैं।

आपकी आज की यह उपलब्धि केवल आपकी ही नही है, इसमें आपके माता – पिता एवं गुरूजनों का डीआईटी विश्वविद्यालय का, इस देवभूमि का और देश का बहुत बड़ा योगदान है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने माता–पिता एवं गुरूजनों का नाम रौशन करेंगे, अपने सपनों को पूरा करते हुए हमारे देश और प्रदेश को नई ऊंचाईयों पर ले जाएंगे।

मुझे आज यह जानकर भी बहुत खुशी हुई है कि डीआईटी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के 25वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

चौबीस वर्षों की इस सफल विकास यात्रा के लिए मैं विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई और आने वाले स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

किसी भी संस्था के विकास में शीर्ष नेतृत्व का बहुत बड़ा योगदान होता है। उनकी नीति, निर्णय और नियत सफलता का मार्ग तय करती है। नेता ही अपनी संस्था या कम्पनी को आगे ले जाता है।

हमारा इतिहास नेतृत्व और सफलताओं की ऐसी ही महान प्रेरणाओं और कहानियों से भरा हुआ है। कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होने हजारों वर्ष पहले ही इस देश को अपने ज्ञान और शक्ति के बल पर राह दिखायी थी।

महर्षि वाल्मीकि, वेदव्यास, पाणिनि, पतंजलि, चरक, सुश्रत, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, आर्यभट्ट, वराह मिहिर, कालिदास, जगद् गुरू शंराचार्य, गुरू नानक देव जी, रामानुजाचार्य और ऐसे ही असंख्य महापुरूष, जिनके कारण आज भी भारत की अस्मिता और महानता विद्यमान है। इनसे ही हमें ज्ञान–विज्ञान की महान शिक्षाएं विरासत में प्राप्त हुई हैं।

किसी संस्कृति और सभ्यता की जीवंतता तभी तक सुरक्षित रहती है जब लोग उसका मूल्य चुकाते हैं, और इसका सर्वोच्च मूल्य है त्याग और बलिदान।

आज भी सीमाओं पर हमारे देश के प्रहरी अपने इसी महान राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए बड़ी कुर्बानियां दे रहे हैं। **'वीर भोग्य वसुन्धरा' का यही अर्थ**

है कि इस धरती के वैभव केवल वीरता के बल पर ही प्राप्त होते हैं।

इस वीरता के इतिहास में हमारी महान गुरू परंपरा ने बलिदान दिये हैं। गुरू नानक देव जी से लेकर गुरू गोविन्द सिंह जी तक सिख गुरू परंपरा ने मुगलों के शासन काल में सैन्य शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति के बल पर भारत और भारतीय संस्कृति की रक्षा की है।

हजारों सालों की गुलामी के बीच भी हम अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। अपनी सभ्यता और संस्कृति को नहीं खोया। ज्ञान, विज्ञान, कला और कौशलों की महान परम्परा को जीवित रखा।

चुनौतियां आज भी वही हैं हम अपनी अस्मिता, शक्ति और समृद्धि के लिए संघर्ष कर हरे हैं।लेकिन हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने नये भारत में अपने आत्म गौरव के जागरण का मार्ग खोज निकाला है।

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव को हमने अपनी इसी शक्ति के जागरण पर्व के रूप मे मनाया है।

सीमाओं की रक्षा, संस्कृति और सभ्यता की रक्षा, विकसित भारत का सपना, नागरिकों की खुशियां, सुगमता, गति, शक्ति, कौशल, यह सब खुशहाल भारत के सपनों को साकार करने के मार्ग हैं।

महान भारत, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' **विकसित भारत** के सपनों को पूरा करने के लिए हमें प्रधानमंत्री जी ने पांच प्रण दिये हैं जिन पर हमें गहराई से विचार करना है, उन्हे अपने आचरण में लाना है।

हमारा पहला प्रण **'विकसित भारत'** है। युवाओं के संकल्प और शक्ति और साधना से हम इसे शीघ्र ही प्राप्त करना है।

हमारा दूसरा प्रण **'दासता की सभी निशानियों को मिटाना'** है। एक लम्बी गुलामी के बाद हमारा देश आजाद तो हुआ था, लेकिन हमारी दासता की निशानियां हमें जकड़े हुई हैं।

इसके लिए हमारा तीसरा प्रण काम आयेगा और यह तीसरा प्रण है – भारत की **समृद्ध विरासत पर गर्व** करना। **हमें मालूम ही नही है कि हमारी पहचान क्या है? हमारी ताकत क्या है?** हमें अपनी विरासत और ताकत दोनों को समझना होगा और उस पर गर्व करना होगा।

हमारा चौथा प्रण **देश में एकता की ताकत को बढ़ाना** है। आज शत्रु ताकतें हमारी एकता को विखंडित करने में ही लगी हैं। **'एक भारत श्रेष्ठ भारत'** हमारी शक्ति

भी है और समृद्धि भी । एकता ही भारत को विकसित भारत के स्वप्न को साकार करेगी।

हमारा पांचवा प्रण **'नागरिकों के कर्तव्यों** का पालन करना है, संविधानिक कर्तव्यों के साथ ही हमारे नैतिक कर्तव्य भी हैं जिनके बल पर हमें आगे बढ़ना है।

अमृत काल के इन 25 वर्षों में विकसित भारत का नेतृत्व आपकी पीढ़ी की युवा शक्ति को ही करना है। आप को वेद का ये मंत्र याद रखना चाहिए – **'अयं मे हस्तो भगवान् भगवत्तरः'** मेरा हाथ ही भगवान हैं, भगवान से भी बढ़कर हैं, आपका हाथ ही आपका भगवान है।

आपने यह कहावत तो सुनी होगी **'अपना हाथ जगन्नाथ'।** मै चाहुंगा कि हर युवा अपने हाथों के स्किल से नये भारत का निर्माण करे।

अपने हाथों से विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए **'स्टार्टप इंडिया'** एक वरदान है।

स्टार्टअप के रूप में शुरूआत करने वाले 104 स्टार्टअप 1 बिलियन डॉलर से अधिक की पूंजी वाले यूनिकॉर्न बन गये हैं।

भारत के (75000) पिचहत्तर हजार स्टार्टअप तेजी से 1 बिलियन डॉलर से अधिक की पूंजी वाले यूनिकॉर्न बनने की राह में आगे बढ़ रहे हैं। हम दुनिया में दूसरे स्थान पर हैं। चीन को हमने पीछे छोड़ा है।

हमने हर क्षेत्र में शक्ति और समृद्धि अर्जित करनी है। **विश्वगुरू भारत** का सपना सार्थक करना है।

अपनी सोच, विचार और धारणा में बदलाव के लिए विकसित भारत बनाना है। भारतीयता पर गर्व करना है। प्राचीन और वैज्ञानिक सभ्यता पर गर्व करना है।

सोच, विचार और धारणा में कितनी ताकत है यह इतिहास की एक घटना से हम समझ सकते हैं। एक व्यक्ति की सोच, एक व्यक्ति की धारणा युगों – युगों तक प्रभाव डाल सकती है।

युद्ध भूमि में आचार्य चाणक्य ने देखा कि सारी सेना उन्हे छोड़ कर दुश्मन के साथ मिल रही है उनके सहयोगी भी विश्वास छोड़ कर युद्ध से भाग गये है लेकिन चाणक्य ने जीत का निश्चय नहीं छोड़ा और ईश्वर को धन्यवाद देते हुए कहा – **'बुद्धिस्तु मा गम मम'** हे ईश्वर आपका बहुत बहुत धन्यवाद, क्योंकि अभी मेरी बुद्धि तो मेरे साथ है।

अपनी बुद्धि के बल पर मै विजय पाउंगा। अपने लक्ष्य हासिल करूंगा, और यही हुआ। चाणक्य विजयी हुए सदियों तक भारत का साम्राज्य अखण्ड रहा।

आप भी अपनी बुद्धि पर दृढ़ विश्वास करें, बड़ी जिम्मेवारियां और नेतृत्व लें।

अपने विचार, व्यवहार, कला, कौशल, सोच, समझ पर भरोसा रखें उन्हे उपयोग में लगाएं। आपने अर्जित ज्ञान से राष्ट्र के निर्माण करें।

टैक्नालाजी, इनोवेशन, आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, मासमीडिया, शोसलमीडिया, ड्रान टैक्नालाजी आज की आवश्यकताएं हैं। भारत की ज्ञान–विज्ञान प्रणाली से नये रिकार्ड बनाएं।

इसरो जैसे भारतीय विज्ञान के केन्द्र हमारे लिए प्ररणास्रोत हैं। 'मंगल मिशन' दुनिया के लिए एक उदाहरण है।

भारत रक्षा और विनिर्माण, डिफेंस और मैन्यूफैक्चरिंग के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रहा है।

'आईएनएस विक्रान्त' का अभी कुछ समय पहले ही समुद्र अवतरण हुआ है

मिसाइल दागने और हथियारों का इस्तेमाल करने में सक्षम स्वदेशी Light Combat Helicopter को अपने बेड़े में शामिल किया है।

रेल, सड़क, वायुमार्ग सुदृढ़ और सुविकसित हो रहे हैं। आप सब को इन बड़े लक्ष्यों को अपने हाथों में लें।

बिजनेस और विनिर्माण के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं, आप नौकरी देने वाले बनें। मैन्यूफैक्चरिंग, पैकेजिंग, मार्केटिंग, सप्लाई चैन अभूतपूर्व संभावनाओं के क्षेत्र हैं।

हम उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा और अनोखी संस्कृति के साथ अपने नये स्टार्टअप पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

उत्तराखण्ड की ग्रामीण आबादी पलायन की बड़ी विभीषिका से जूझ रही है, जबकि उत्तराखण्ड के पास अमूल्य सांस्कृतिक और प्राकृतिक सम्पदा भरी हुई है।

जैविक खेती, पर्यटन, तीर्थाटन, साहसिक खेलयोग, आयुर्वेद, वेलनेश सेक्टर, ध्यान, प्राणायम, साधना, मनोरंजन का क्षेत्र अत्यन्त संभावनाओं से भरा क्षेत्र है।

हम उत्तराखण्ड की प्रकृति और संस्कृति में भी उद्यम और इनोवेशन ढूंढ सकते हैं।

कुछ दिन पहले मैने राजभवन में पिथौरागढ़ के एक महिला स्वयंसहायता समूह को सम्मानित किया था, जो **'पहाड़ की अंजीर के नाम से लोकप्रिय बेडू फल'** के जैविक उत्पाद – जैली, जैम, चटनी, अचार और ऐसे ही अनेक प्रोडक्ट तैयार कर रहे हैं।

उन्होने संकल्प लिया है कि वे अपने इस उत्पाद को आधार बना कर चार करोड़ रूपये के वार्षिक टर्नआवर के लक्ष्य को हासिल करेंगे। ये तो एक बहुत छोटा उदाहरण है, आप अपनी शिक्षा, कौशल और प्रशिक्षण क बल पर बढ़े लक्ष्य तय कर सकते हैं।

पलालन की समस्या का समाधान खोज सकते हैं।

'पतंजलि' जिसे युवा सन्यासियों द्वारा कुछ वर्ष पहले ही उत्तराखण्ड की इसी धरती से सुरू किया था, यह ब्रांड आज वैश्विक बन चुका है। यह भारतीयता के साथ नयी शक्ति अर्जित करने का समय है।

हमें हमारी सोच, हमारे विचार, हमारी धारणाओं को रीसेट करना होगा। आत्मनिर्भर, भारत केन्द्रित, उद्यमी और वैश्विक मापदण्डों से आगे सोचना होगा।

इसलिए मैं हमेशा यही कहता हूँ कि आप सभी अपने विचार, अपनी सोच और धारणाओं और सकारात्मक

बनाएं। भारत के गौरव को समझें। अपनी सैल्फ वैल्यू को समझें।

हमारी यह सकारात्मक सोच ही नये भारत को गति और शक्ति से राष्ट्र आपकी ओर देख रहा है।

आपके माता–पिता और देश की आपसे बहुत उम्मीदें हैं। राष्ट्र की आशाएं आपकी विशेषज्ञता और एक शक्तिशाली भारत के निर्माण की प्रतिबद्धता से जुड़ी हुई हैं।

आपको बहुत बहुत बधाई और उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिन्द!